Impact Factor-8.632 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

December - 2023

(CDXLVI) 451-(A)

आजादी के ७५ वर्ष : हिंदी भाषा, साहित्य, एवं पत्रकारिता चिंतन और चुनौतियाँ

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
A. S.R. & D.T. I.
Amravati

Executive Editor
Dr. Pradeep Patil
I/C Principal

Editor
Dr. Bhagwan kadam
Dept. of Hindi,

Co-Editor
Dr. Jafar Choudhari
Hod dept.of Hindi,

Master Deenanath Mangeshkar College Aurad Shahajani
Tq.Nilanga Dist Latur,

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : *www.aadharsocial.com*

Aadhar Publications

19	स्वाधीनता संग्राम में हिंदी कविता की भूमिका डॉ.सहदेव वर्षाराणी निवृत्तीराव	76
20	हिंदी आदिवासी विमर्श एवं चुनौतियाँ : एक परिचयात्मक अध्ययन शेख अलीम हबीबसाब	79
21	दलित अस्मिता, अस्तित्व और संघर्ष का जिंदगीनामा: उजास" प्रा. डॉ. मारोती भरतराव लुटे	84
22	हिंदी भाषा चिंतन और उसकी चुनौतियाँ डॉ. वर्षा मोरे – पावडे	88
23	प्रेमचंद जी के साहित्य का चिंतन एवं चुनौतियां डॉ. रेविता बलभीम कावले	90
24	इक्कीसवी सदी की महिला लेखिकाओं की कहानियों का समीक्षात्मक अध्ययन प्रा.डॉ. जाधव ज्ञानेश्वर भाऊसाहेब	95
25	परंपरा और संस्कारों में अपनी ड्योढ़ी में जकड़ी माई उपन्यास की स्त्री पात्र ' माई ' डॉ. विद्या खाडे	99
26	अस्मितामुलक विमर्श : अवधारणा और स्वरूप डॉ ज्योति मुंगल	102
27	रत्नकुमार सांभरिया के 'साँप' उपन्यास में घुमंतुओं का स्थाई जीवन के लिए संघर्ष डॉ.सुनील गुलाबसिंग जाधव,	107
28	दलित उपन्यासों में दर्दनाक सामाजिक स्थिति का चित्रण डॉ शंकर गंगाधर शिवशेट्टे	110
29	सामाजिक पत्रकारिता और एकीकरण : संभावनाएं एवं परीक्षण डॉ. पूजा शर्मा	116
30	हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता: चिंतन और चुनौतियां डॉ सीताराम आठिया	119
31	दशम् दशक के हिंदी उपन्यासों में 'क्रोध' भाव डॉ. सन्मुख नागनाथ मुच्छटे,	124
32	दलित साहित्य में अस्मिता मूलक विमर्श' डॉ.शेख शहेनाज अहेमद	130
33	'आपका बंटी' उपन्यास में चित्रित बाल समस्या का चिंतन प्रा. डॉ. गंगा एकनाथ शेळके, (गायके)	133
34	मुद्रित पत्रकारिता : फीचर लेखन प्रा.डॉ.बायजा कोदुळे ; साळुंके	136
35	अकाल में उत्सव उपन्यास में व्यक्त किसान विमर्श प्रा. राजेगोरे आर.व्ही	139
36	मुस्लिम होने के मायने : 'सूखा बरगद प्रो.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर ,डॉ. मुखत्यार शेख	144
37	नारी मनोविश्लेषण व विघटन का कलात्मक प्रमाण : "कुलटा" डॉ. सैबाशिरीन हारुनरशीदशेख	149
38	'21वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में मुस्लिम समाज की समस्याएं' प्रा. डॉ. मुल्ला मुस्तफा लायक	153

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -8.632, Issue NO, (CDXLVI) 451-A
ISSN : 2278-9308
December, 2023

दलित साहित्य में अस्मिता मूलक विमर्श

डॉ.शेख शहेनाज अहेमद
शोध लेखक हिंदी विभागाध्यक्ष हुतात्मा जयवंतराव पाटील महाविद्यालय, हिमायतनगर, जि.नांदेड

दलित विमर्श जाति आधारित अस्मिता मूलक विमर्श है । इसके केंद्र में दलित जाति के अंतर्गत शामिल मनुष्यों के अनुभवों, कष्टों और संघर्षों को स्वर देने की संगठित कोशिश की गई है। यह एक भारतीय समाज की बुनियादी संरचनाओं में से एक है। अस्मिता विमर्श का आशय स्पष्ट है - अपने अस्तित्व का बोध, जो आत्मनिर्णय और आत्माभिव्यक्ति का प्रश्न है।

अस्मितामूलक स्मर्श को जानने से पूर्व हमे अस्मिताशब्द का अर्थ और स्वरूप को समझना होगा। 'आदर्श हिंदी शब्दकोश' में "अस्मिता, शब्द के लिए आत्मश्लाघा, अहंकार मोह आदि अर्थ दिए गए है।"[१] 'अस्मि' शब्द अस + मिन से बना है। अस्मि अर्थात मैं हूँ। "अस्मि की भाववाचक संज्ञा 'अस्मिता' है। इस शब्द से स्वत्व का बोध होता है।"[२] वामन शिवराम आप्टे के अनुसार, "अस्मिता शब्द की निर्मिती अस्मि + तल + टाप से हुई है। जिसका अर्थ है-अहंकार।"[३]

बीसवीं सदी विमर्शो की सदी है। इस सदी में समाज के सभी वंचित समुहों ने अपने अधिकार और अपनी अस्मितागत पहचान के लिए निर्णायक लड़ाई छेड़ रखी है। ये लड़ाई किसी के विरूध्द नही बल्कि अपने पक्ष में लड़ी जा रही है। इनल लड़ाईयों के पीछे एक सुविचारित दर्शन कार्य कर रहा है। हिंदी साहित्य के तीनों विमर्शों में समाज के इन वंचित वर्गों ने कहानी, कविता, उपन्यास, आत्मकथा और अन्य विधाओं के माध्यम से साहित्य जगत में मुख्य धारा का ध्यान अपनी ओर खींचा है। इन तीनों विमर्शों में शोषित समाज के हक के लिए लेखन कार्य किया जा रहा है। यह तीनों विमर्श वर्तमान समय में देश के लगभग सभी विश्वविधालयों के हिंदी या अन्य भाषाओं के पाठयक्रम का हिस्सा है। विविध विश्वविद्यालयों में इन विमर्शों पर अनुसंधान और शोध कार्य किया जा रहा है।

अस्मिता विमर्श की शुरूवात ही दलित एवं वंचित होने के अहसास के साथ होती है। 'दलित' शब्द को समाज में आर्थिक दुरावस्था गरीबी के पीडित जनों के लिए प्रयुक्त किया जाता है। ये वे लोग है जिन्हें सदियों से वर्ण जाति, धर्म, संप्रदाय के नाम पर सामाजिक प्रताडना का शिकार होना पड़ा है।

सर्वप्रथम अँग्रेजी सरकार ने १६३३ में जबष्क्मचतमेमक बर्समेष समाज के लोगों में कुछ सुविधाएँ दी थी तब पहली बार 'दलित' शब्द का प्रयोग किया। सामाजिक और आर्थिक रूप से शोषित, पीडित, वंचित, दलित व कुचला हुआ वर्ग दलित वर्ग माना गया। भारतीय समाज में सदियों से सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक रूप से उत्पीड़ित वर्ग ने अत्याचार व शोषण के खिलाफ़ अपने अधिकारों की माँग करना शुरू किया वहीं से दलित अस्मिता की शुरूवात होती है। एक समय था जब उत्पीड़ित वर्ग अपने उपर हो रहे अन्याय, पीड़ा तथा शोषण को नियति मानकर चूप रहा जाता था। उसके बाद इस वर्ग ने अपनी पीड़ा को लेखनी के माध्यम से अभिव्यक्ति देना प्रारंभ कर दिया। इसी उत्पीड़ित वर्ग से आये लेखकों ने अपने विचारों से एक ऐसा आंदोलन खड़ा कर दिया जिसने इस वर्ग को शोषकारी शक्तियों के खिलाफ़ अपने मानवीय अधिकारों व अस्तित्व के प्रति लड़ने व जुझने की उर्जा प्रदान की।

जब तक साहित्य यथास्थिति से टकराने का साहस और प्रेरणा नही देता और किसी नई मूल्य दृष्टि और चेतना का प्रसार नही करता, तब तक स्त्री लेखन या पुरूष लेखन, दलित और गैर-दलित, आदिवासी-गैर आदिवासी लेखन का विभाजन सही दिशा निर्माण और वास्तविक समस्याओं को व्यापक परिदृश्य में और सार्थक तरीके से प्रस्तुत नहीं कर सकता। जैसे स्त्री पुरूष समानता और लैंगिक भेदभाव की समस्या आज एक बड़ा सवाल है और हमारे जैसे परंपरावादी समाज की संरचना में यह बहुतसी जटिलताएँ लिए हुए है। इसलिए साहित्य में धर्म जाति, लिंग, भाषा आदि की सीमाएँ नही होनी चाहिए और स्त्री पर स्त्री लेखन कर सकती है और दलित पर केवल दलित लिख सकते है तभी वह प्रामाणिक होगा, यह धारणा भी एकांगी है। किसी रचना की सार्थकता इसमें है कि वह अपने समय, समाज और परिवेश की मनुष्य विरोधी ताकतों से कितनी मुठभेड़ करती है। व्यवस्था में न्याय और समानता के लिए कैसे संघर्ष और हस्तक्षेप करती है।

दलित वर्ग ने साहित्य लेखन को अस्मिता व पहचान का हथियार बनाया। दलितों के अपने अधिकारों के लिये संघर्ष से ही दलित साहित्य का जन्म हुआ। दलित साहित्य के बारे में चर्चा करते हुए मोहनदास नैमिशराय ने लिखा है कि, "दलित साहित्य पीड़ा, वेदना, मुक्ति का ही साहित्य नहीं, बल्कि अपने अधिकारों अस्मिता और पहचान के लिए संघर्ष करनेवालों का भी साहित्य है।"[४] इस प्रकार मोहनदास नैमिशराय दलित साहित्य के माध्यम से दलित अस्मिता को व्याख्याचित करते है। उनके मतानुसार दलित अस्मिता में अपने स्वाभिमान को हासिल करने के लिए भीख व अनुनय का

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) –8.632, Issue NO, (CDXLVI) 451-A
ISSN : 2278-9308
December, 2023

सहारा लेना नहीं, बल्कि अपने लिए न्यायपूर्ण अधिकारों व हक की लड़ाई लड़ना है जिसके लिए यह शोषित व उत्पीड़ित वर्ग कलम व कागज़ को माध्यम बनाता है।

साहित्य में वास्तविक मुद्दा हमेशा मानवीय मुक्ति और विशाल जन-जीवन के जनतांत्रीकरण मुद्दा है। जब तक रचनाकार का आंतरिक संघर्ष स्पष्ट मुखर और व्यवस्थित नही होगा, तब तक वह बाहय समस्याओं से लड़ नही सकता। मुक्तिबोध ने इसे 'सर्वहारा चेतना' का नाम दिया था, जो लेखक के क्षोभ और आत्मसंघर्ष को समस्त पीड़ित मानवता से एकाकार कराती है। प्रतिरोध की यही चेतना और संघर्ष की आकांक्षा उन्हे साधारण मानव में असाधारणता का बोध कराती है। प्रेमचंद, निराला, राहुल सांकृत्यायन,यशपाल और नागार्जुन जैसे अनेक प्रसिध्द लेखकों ने अपने लेखन और साहित्य में वर्चस्ववादी, अभिजात मूल्यों को हमेशा प्रश्नांकित किया और सदियों से चले आ रहे शोषण, उत्पीड़न का सशक्त विरोध करते हुए जाति, सांप्रदायिकता और वर्ण से मुक्त लोकतांत्रिक मूल्यों से साहित्य को जोड़ा।

दलित साहित्य को मानवीय सरोकारों व संवेदनाओं की यथार्थ अभिव्यक्ति बताते हुए वरिष्ठ दलित साहित्यकार ओमप्रकाश वाल्मिकि ने लिखा है कि ''दलित साहित्य जन साहित्य है, यानी मास लिटरेचर सिर्फ इतना ही नही लिटलेचर ऑफ एक्शन भी है जो मानवीय मूल्यों की भूमिका पर सामंती मानसिकता के विरूध्द आक्रोश जनित संघर्ष है। इसी संघर्ष और विद्रोह से उपजा है दलित साहित्य।''[५] इस प्रकार ओमप्रकाश वाल्मिकि भी दलित साहित्य को दलितों पर सदियों की गुलामी व यातना के विरूध्द संघर्ष व विद्रोह का परिणाम ही मानते है।

अस्मिता विमर्शमूलक साहित्य रूपों में दलित साहित्य का विशेष महत्व है, जो हिंदी साहित्य में मानवतावाद को स्थापित करने के लिए प्रयासरत है। दलित साहित्य के व्यापक मानवतावादी दृष्टिकोण की ओर संकेत करते हुए ओमप्रकाश वाल्मिकी लिखते है-''दलित लेखन केवल दलितों के अधिकार एवं मूल्यों तक सीमित नही है बल्कि सामाजिक संदर्भों के साथ रचनाकर्म से जुड़कर साहित्य की सृजनात्मकता में मानवीय सरोकारों, संवेदनाओं और स्वतंत्रता, भाई-चारे की भावनाओं को स्थापित करता है। उसकी दृष्टि में प्रत्येक व्यक्ति और उसकी पीड़ा उसके सुख-दुख महत्वपूर्ण है। उसमें दलित हो या स्त्री, उसके प्रति रागात्मक वादात्म्य स्थापित करना दलित साहित्य का प्रमुख प्रयोजन है। दलित चिंतन ने नया आयाम देकर साहित्य की भावना का विस्तार किया है। पारम्पारिक और स्थापित साहित्य को आत्मविश्लेषण और पुनर्विश्लेषण के लिए बाहय किया है।झूठी और अतार्किक मान्यताओं का निर्ममता से विरोध किया है।''[६]

रूढ़ियों के प्रति दलित साहित्य की विद्रोही प्रवृत्ति को देखकर कुछ लोग इस पर आरोप लगाते है कि यह वर्चस्व के लिए संघर्षरत लोगों का साहित्य है। सवर्णों का वर्चस्व समाप्त कर दलितों को वर्चस्व स्थापित हो जाएगा, तो भी स्थिति ज्यों-कि-त्यों रहेगी। लेकिन यह लोगों का भ्रम है। सवर्णों का वर्चस्व राजतंत्र काल में स्थापित हुआ था, लोकतंत्र में इसकी संभावना बिलकुल नही है। एक और महत्वपूर्ण बात है-जाति आधारित भेद-भाव, शोषण, अन्याय अत्याचार के विरूध्द विद्रोह और समाज में समता, स्वतंत्रता, बंधुता की स्थापना के लिए रचे जा रहे दलित साहित्य के मूल प्रेरणास्त्रोत मानवमात्र के हितचिंत वही डॉ.बाबासाहब अम्बेडकर है जिनके विषय में आचार्य रामस्वरूप चतुर्वेदी ने महत्वपूर्ण बात कही है-" इस देश का एक संविधान स्वतंत्र आर्यावृत्त में महाराज ने रचा था, और दूसरा देश के फिर से स्वाधीन होने पर डॉ.अम्बेडकर ने रचा। मनु के विधान में अम्बेडकर के लिए स्थान नही था, या नही जैसा था, अम्बेडकर के विधान में मनु के लिए पूरा स्थान है।''[७] वास्तव में दलित साहित्य डॉ. अम्बेडकर के मानववाद का प्रचार-प्रसार का काम कर रहा है। यही अस्मिता मूलक साहित्य की पहचान है।

टाज दलितों की सामाजिक, स्थिति में परिवर्तन आने लगा है। उन्हें अपनी अस्मिता व आत्मसमान के के साथ जीने का हक है। उनकी भी जिंदगी में बदलाव आ सकता है और वे भी अपने मुक्ति के रास्ते खोज सकते है यह अहसास उन्हें अब होने लगा है। लेकिन राजनीतिक तौर पर उनके उत्थान के नाम पर जो हो रहा है वह व्यक्ति पूजा के कारण निराशजनक है। ''दलित वैश्विकरण और सामाजिक पृथकता की राजनीति के बीच सैंडविच बन गए है। धर्म और धर्मांतरण की तरह वैश्वीकरण भी एक छद्म आशा है इसके मायालोक में दलितों की आवाज गुंज रही है और खोती भी जा रही है।''[८]

टाज देश की स्थिति ऐसी है कि प्रतिनीधिक जनतंत्र सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व की ही राजनीति है। दलित पिछड़ो की राजनीतिक लड़ाई चरम सिमा पर है। वर्तमान में हिंदी समाज भी भेदभाव, पृथकता और घृणा-प्रतिघृणा का केंद्र बना हुआ है। वर्तमान समय में दलित विखंडन के अतिवादों ने अस्मिता के सवाल को एक प्रायोजित मामला बना दिया है। दलित विमर्श में परम्पराओं एवं रूढ़ियों के विखंडन की उत्सुकता जितनी पुरानी है, साम्राज्यवाद से मुठभेड़ की नही है। हिंदी क्षेत्र में दलित अस्मिता आंदोलन के रूप में जगह नही ले पा रही है। इस आंदोलन में सच्ची पीड़ाओं के रहते उत्तेजनात्मक बातें अधिक है। आज दलित अस्मिता और दलित राजनीति के बीच अंतर है। दलित राजनीति में आज न समाज में व्याप्त में व्याप्त अंधविश्वासों को निकाल फेंकने की बात है और न ही स्त्री मुक्ति का कोई प्रश्न। आज दलित राजनीति में वे सारी बाते या विकृतियाँ आ गई है जो लोकतांत्रिक कहे जाने वाले राष्ट्रीय दलों को खा चूकी है। सदियों से मुख्यधारा में

शामिल शोषित, पीड़ित व अपनी अस्मिता से अनभिज्ञ इस समाज को प्रथम महात्मा बुद्ध ने अपने अधिकारों की पहचान दिखायी। उन्होंने ही वर्णव्यवस्था का विरोध कर मानव केंद्रित दर्शन प्रस्तुत किया। दलित अस्मिता की वर्णव्यवस्था का विरोध करते हुए बुद्ध की समतावादी दृष्टि, करुणा व शील की भावना को स्वीकार करती है। महात्मा बुद्ध के बाद मध्ययुग के निर्गुणवादी संतों ने भी वर्णव्यवस्था पर टीका कर अपनी आवाज बुलंद की। उन्होंने संपूर्ण देश में कई भक्तों ने मनुष्य को केंद्र में रखकर चिंतन प्रस्तुत किया।

दलित साहित्य इन्हीं संतों की इस ऐतिहासिक भूमिका को पूर्ण सम्मान के साथ स्वीकार करता है। संतों को छोड़कर शेष समाज की दलितों को देखने की दृष्टि में कोई विशेष बदलाव नहीं आया। फिर भी यह दलित समाज संतों के इस विद्रोह और आक्रमकता के सामने नतमस्तक होता है। दलित साहित्य फुले के क्रांतिकारी परिवर्तनशील विचारों को भी स्वीकार करता है। जिनके माध्यम से फुले ने सर्वधर्म समभाव व धर्म-निरपेक्षता का व्यापक आदर्श संपूर्ण भारतीयों के सामने रखा। वे दलितों की ऐसी स्थिति का कारण शिक्षा व ज्ञान को मानते थे। महात्मा फुले ने दलित ही नहीं बल्कि इस समाज की उन स्त्रियों के लिए भी शिक्षा व ज्ञान का द्वार खोला जो दलित से भी दलित जीवन जिया करती थी। महात्मा फुले के बाद दलित साहित्य के सृजन में डॉ.अम्बेडकर की विचारधारा मूल रूप से काम कर रही है। उनकी विचारधारा दलित साहित्य का प्रस्थान बिंदू है। डॉ.अम्बेडकर दलित साहित्य की प्रेरणा है। डॉ.अम्बेडकर ने दलितों को न केवल उनके आत्म-सम्मान, अस्मिता व स्वाभिमान का अहसास कराया बल्कि भारतीय समाज में अपना स्थान भी दिलाया। उन्होंने ही दलितों को उनके मानवीय अधिकारों से परिचित कराते हुए अन्याय व अत्याचार के खिलाफ लड़ना सिखाया। अम्बेडकर के संपूर्ण विवेचन के केंद्र में मनुष्य है। मनुष्य को उसके मानवीय अधिकारों से अवगत कर उसे उपलब्ध करा देना वे अपना कर्तव्य समझते थे। दलित साहित्य अम्बेडकर के संपूर्ण विश्लेषण और सुझावों को पूर्ण रूप से स्वीकार करता है। अस्मिता, स्वाभिमान व मानवीय अधिकारों की रक्षा के लिए डा.अम्बेडकर ने 'पढ़ो' 'संगठित हो जाओ' और ' संघर्ष करो' ये तीन सूत्र दिए। दलित-साहित्य इनके ये तीन सूत्रों को अस्मिता, स्वाभिमान व स्वतंत्रता के रूप में स्वीकार करता है। दलित साहित्य में जो विद्रोह एवं नकार की चिंगारियाँ है वे अम्बेडकर के व्यक्तित्व व विचारों से ही प्राप्त है।

आज संपूर्ण देश में दलित अस्मिता का प्रश्न सत्ता में दावेदारी का पैतरा लेते हुए आगे बढ़ रहा है। स्वतंत्र भारत में संविधान ने दलितों को भले ही सारे मानवीय अधिकार दे दिये हो लेकिन आज भी मुख्यधारा का समाज उनको पूर्णतः अपना नहीं रहा है। दलितों ने अपनी अस्मिता व उत्पीड़न की पहचान को लड़ने का कारगार हथियार बना लिया है। जहाँ परम्परागत समाज-व्यवस्था में दलितों की अस्मिता व मानवीय अधिकार के सभी दरवाजे बंद थे, वहीं आज धन, धर्म, अधिकार, अस्मिता व सम्मान का भूखा यह समाज शिक्षित होकर अस्मिता व अधिकारों के प्रति जागरूक होता दिखाई दे रहा है।

संदर्भ :-
१)आदर्श हिंदी कोश-सं.प.रामचंद्र पाठक - पृ.६४
२)अस्मिता विमर्श के स्त्री स्वर - अर्चना वर्मा - पृ.३१
३)संस्कृत हिंदी कोश - वामन शिवराम आप्टे - पृ.१३२
४)हिंदी दलित साहित्य - मोहनदास नैमिशराय - पृ.१३
५)दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र - ओमप्रकाश वाल्मिकी - पृ.१५
६) दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र - वही -पृ. २५-२६
७) हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास - रामस्वरूप चतुर्वेदी - पृ.१७
८) भारतीय अस्मिता और हिंदी - शंभुनाथ -पृ.२४१
९) दलित साहित्य स्वरूप एवं संवेदना - डॉ. सुर्यनारायण रणसुभे